

**प्रकाशात्मा** वि. (तत्.) [प्रकाश+आत्मा] प्रकाशमय, चमकीला, उज्ज्वल; सूर्य।

**प्रकाशिकी** स्त्री. (तत्.) दे. प्रकाशविज्ञान।

**प्रकाशित** वि. (तत्.) 1. प्रकाश युक्त, जिसमें प्रकाश निकल रहा हो, चमकता हुआ, प्रकट किया हुआ, आलोकित किया हुआ, जो दिखे, प्रत्यक्ष, स्पष्ट 2. छपा हुआ, मुद्रित।

**प्रकाश्य** वि. (तत्.) 1. आलोकित करने योग्य प्रकाश में लाए जाने योग्य; प्रकट करने योग्य, सबके सामने या सबको सुनाकर करने योग्य अथवा कहा हुआ 2. छपने योग्य।

**प्रकासना** सं.क्रि. (तत्.-प्रकाशन) प्रकाश से युक्त करना, चमकाना अं.क्रि. प्रकाशित होना।

**प्रकिण्व** पुं. (तत्.) खमीर उत्पन्न करने वाली वस्तु या जीवों के शरीर में रासायनिक प्रतिक्रियाओं अथवा परिवर्तनों के लिए सक्रिय विशेष जैव उत्प्रेरक जो प्रायः रंगहीन होता है engine

**प्रकिण्वन** पुं. (तत्.) प्रकिण्व बनने की प्रक्रिया, खमीर बनाने की प्रक्रिया।

**प्रकिरण** पुं. (तत्.) फैलाना, बिखेरना, मिश्रण।

**प्रकीर्ण** वि. (तत्.) 1. बिखरा हुआ, फैला हुआ 2. अस्त-व्यस्त 3. असंबद्ध 4. असंलग्न 5. फुटकर, विभिन्न प्रकार का, तरह-तरह का, छितरा हुआ, तितरा-बितरा, छिन्न-भिन्न, प्रसृत 6. फुटकर संग्रह, विविध विषयों, नियमों आदि का संकलन।

**प्रकीर्णक** वि. (तत्.) प्रकीर्ण करने वाला, बिखरेने वाला, छिन्न-भिन्न कारक पुं. फुटकर वस्तुओं का संग्रह 2. चँवर 3. घोड़े के सिर पर लगाई जाने वाली कलगी।

**प्रकीर्णन** पुं. (तत्.) 1. प्रकीर्ण करने की प्रक्रिया दे. प्रकीर्ण 2. बिखेरना, बिखराव विशे. सूर्य के श्वेत प्रकाश का सात रंगों की किरणों में विभक्त होना प्रकीर्णन कहा जाता है dispersion

**प्रकीर्तन** पुं. (तत्.) स्तुति करना, यशोगान करना, प्रशंसा करना, ऊँची आवाज में कीर्तन करना 2. घोषणा करना, उद्घोषण।

**प्रकीर्ति** स्त्री. (तत्.) 1. प्रशंसा 2. प्रसिद्धि, ख्याति 3. यश 4. घोषणा 5. प्रशस्ति।

**प्रकीर्य** वि. (तत्.) प्रकीर्ण किया जाने योग्य, बिखेरा जाने वाला, छिन्न-भिन्न किया जाने वाला पुं. रीठा करंज, काँटेदार करंज।

**प्रकुंच** पुं. (तत्.) 1. पुर्जे को पकड़ने का ऐसा उपकरण जिसके पकड़ने की क्षमता को विस्तृत अथवा संकुचित किया जा सके 2. एक मान जो लगभग एक मुट्ठी के बराबर होता था।

**प्रकुंचन** पुं. (तत्.) सिकुड़ना, संकोचन, संकुचित करना आयु. हृदय पेशियों द्वारा रूधिर को धमनियों में पंप करने के समय हृदय की सिकुड़न।

**प्रकुपित** वि. (तत्.) [प्र+कुपित] 1. बहुत गुस्से में, अतिक्रुद्ध, जिसका प्रकोप बहुत बढ़ गया हो 2. उत्तेजित।

**प्रकूष्मांडी** स्त्री. (तत्.) दुर्गा का विशेषण, प्रकोप करने वाली, क्रोध करने वाली।

**प्रकृत** वि. (तत्.) 1. जन्मजात, देशज 2. प्रकृति द्वारा उत्पन्न या रचित, प्रकृतिजन्य, प्रकृतिक 3. जो कृत्रिम बनावटी या विकृत न हो 4. जिसमें कोई विकार न हो जो अपने ठीक या वास्तविक रूप या स्थिति में हो 5. जो स्वभाव पर आधारित हो, नैसर्गिक, कुदरती 6. स्वभावगत, स्वाभाविक जो अपनी यथार्थ, सामान्य स्थिति में हो 7. सहज, सामान्य, साधारण 8. प्रस्तुत प्रसंग/विषय के विचार से उपयुक्त/आवश्यक, वांछनीय, संगत।

**प्रकृत अन्वितार्थ** पुं. (तत्.) अन्विति के उपरान्त निकलने वाला सहज व स्वभाविक अर्थ।

**प्रकृत जन** पुं. (तत्.) प्रकृति के बीच मूल अवस्था में रहने वाले लोग, नागर आचार-विचार से अनछुए लोग।

**प्रकृत ज्ञान** पुं. (तत्.) स्वभावतः स्वयम् सीखा गया ज्ञान उदा. शिशु द्वारा माँ का दूध पीना, मछली द्वारा तैरना।

**प्रकृत ज्ञानवाद** पुं. (तत्.) 1. प्रत्यक्ष अनुभव तथा व्यवहार से ज्ञान प्राप्ति के सिद्धान्त का मत 2. ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रकृति पर निर्भर रहने का वाद।